



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्रसाधारण

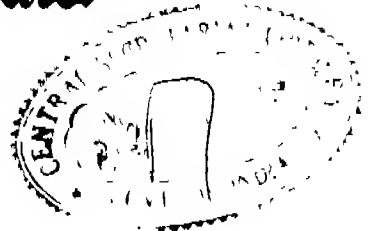
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 305] नई दिल्ली, शुक्रवार, नवम्बर 7, 1975/कार्तिक 16, 1897
No. 305] NEW DELHI, FRIDAY, NOVEMBER 7, 1975/KARTIKA 16, 1897

इस भाग में भिन्न नुष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 7th November 1975

G.S.R. 552(F).—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Defence and Internal Security of India Act, 1971 (42 of 1971), and of all other powers enabling the Central Government in this behalf, the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Defence and Internal Security of India Rules, 1971, namely :—

1. **Short title and commencement.**—(1) These rules may be called the Defence and Internal Security of India (Fifth Amendment) Rules, 1975.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. **Amendment of rule 37 of the Defence and Internal Security of India Rules, 1971.**—In rule 37 of the Defence and Internal Security of India Rules, 1971, after sub-rule (4), the following sub-rule shall be inserted, namely :—

(5) Where any person is prosecuted for the contravention of any provision of clause (b), clause (c), clause (d) or clause (e), of sub-rule (1) and it is proved that he was present in, or in the neighbourhood of, any such building, place or property as is mentioned in such clause and was in possession of any instrument, implement or other material capable of doing any act which is likely to impair the efficiency or impede the working of, or cause damage to, such building, place or property, it shall be presumed, for the purposes of the said sub-rule (1), that he was so present with the intention of contravening the provisions of the clause aforesaid and the burden of proving that he had no such intention shall be on him".

[No. F.II/17016/1/74-S&P(D-ID)]

C. V. NARASIMHAN, Jt. Secy.

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 नवम्बर, 1975

सांकांनि० 552(अ).—केन्द्रीय सरकार, भारत रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम, 1971 (1971 का 42) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों, तथा उसे इस निमित्त सशक्त बनाने वाली सभी अन्य शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारत रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा नियम, 1971 में प्रागे और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और आरंभ.—(1) इन नियमों का नाम भारत रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा (पांचवां संशोधन) नियम, 1975 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. भारत रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा नियम, 1971 के नियम 37 का संशोधन.—भारत रक्षा और आन्तरिक सुरक्षा नियम, 1971 के नियम 37 में, उपनियम (4) के पश्चात्, निम्नलिखित उपनियम जोड़ा जाएगा, अर्थात् :—

“(5) जहाँ किसी व्यक्ति पर उपनियम (1) के खंड (ख), खंड (ग), खंड (घ) या खंड (ङ) के किसी उपबंध के उल्लंघन के लिए अभियोजन किया जाए और यह साबित हो जाए कि वह किसी ऐसे भवन, स्थान या सम्पत्ति में, जो उस खंड में उल्लिखित है, या उसके पास था, तथा उसके पास कोई ऐसा औजार, उपकरण था या ऐसी अन्य सामग्री थी जिससे कोई ऐसा कार्य किया जा सकता है जो ऐसे भवन, स्थान या सम्पत्ति की कार्यकुशलता को बिगाड़ सकता है या उसके कार्यचालन को बाधित कर सकता है या उसको नुकसान पहुंचा सकता है तो, उप नियम (1) के प्रयोजनों के लिए, इस बात की उपधारणा की जाएगी कि वह वहां उपरोक्त खंड के उपबंधों का उल्लंघन करने के आशय से था तथा यह साबित करने का भार उसी पर होगा कि उसका ऐसा कोई आशय नहीं था।”

[सं० फा० II/17016/1/74-एस० एंड पी० (डी-II)],

सी० वी० नरसिम्हन, संयुक्त सचिव।